चैतन्य त्रिवेदी

मालिक तो मालिक

ई-मेल-chaitanyatrivedi811@gmail.com

मालिक ने जन्मदिन पर सबको पाजामे भेंट किए। वे जन्मदिन पर कुछ न कुछ देते रहते हैं। सबने बताया—‘‘जब भी मालिक के दिए पजामों में होते हैं, वे बरबस याद आ जाते हैं।‘‘

पत्नी ने कहती रही—‘‘यह वही पजामा है ना, जो पिछले जन्मदिन पर मालिक ने दिया था!‘‘

‘‘नहीं, उस समय तो एक कुरता दिया था! वह नहीं पहनते!‘‘

‘‘कहीं सादी-ब्याव में जाना हो तो संभाल रखा है।‘‘

मालिक ने कुरता देते वक्त कहा भी था—‘‘कोठी पर कोई उत्सव हो, वार-तेवार हो, तब पहनना। महँगा है।‘‘

‘‘हम सब नौकरों को मालिक ने इस दफा जनमदिन पर कमीज भेंट दी थी।‘‘

पत्नी ने कहा, ‘‘नौकरों को भेंट नहीं दी जाती है, बाँटी जाती है।‘‘

‘‘हाँ! हाँ!! वही समझ लो!‘‘

‘‘समझो क्या, सीधी-सी बात है, गरीबों में बाँटा जाता है।‘‘

उस दिन मालिक का कमीज-पजामा पहने, पत्नी की तरफ देखकर उसने कहा, ‘‘मेरी रगों में बह रहा नमक भी मालिक का ही दिया हुआ है।‘‘

पत्नी ने आइने में देख रहे पति से कहा, ‘‘तुम्हारी मेहनत का क्या है फिर! मालिक के पास तो काम माँगने तुम जैसे कौड़ी के पच्चीस आते होंगे।‘‘

फिर बाल सँवारते-सँवारते वह हँस पड़ा—‘वाह मालिक! तुमने हमारा कुछ भी नहीं रहने दिया। आखिर मालिक किसी के पास उसका अपना कुछ भी नहीं रहने देते, चाहे वह दुनिया का हो या ज़िन्दगी का!’

पत्नी की तरफ देख, यह कहता हुआ वह बाहर निकल गया।

ईश्वर के लिए ...!

चैतन्य त्रिवेदी

वह सड़कों पर इश्तहार चिपकाने का काम करता था। उसे यह अच्छी तरह मालूम हो गया था—कहाँ चिपकाने से इश्तहार लोगों की निगाह में आ जाता है। प्रचार करने वालों के लिए वह चहेता आदमी निकला।

एक दिन उसका बच्चा गुम हो गया। वह ढूँढ-ढूँढ कर थक गया था। प्रचार करने वाले उसके मोबाइल पर इश्तहार चिपकाने के लिए लगातार घंटी दे रहे थे। वह उनके पास रोता हुआ गया—''मेरा बच्चा गुम हो गया है। कहीं मिल नहीं रहा।''

प्रचार करने वालों ने उसके बच्चे का फोटो माँगा और बच्चे के गुम होने का इश्तहार छाप उसे दे दिया। तुम हमारे इश्तहार के साथ, अपने गुमशुदा बच्चे का इश्तहार भी चिपका देना।

वह जगह-जगह दुःखी मन लिये इश्तहार चिपकाता जाता। हर इश्तहार के पीछे चिपकाने के पेस्ट के साथ उसके आँसू भी टपक पड़ते। जगह-जगह इश्तहारों के पीछे उसका दुःख भी चिपका हुआ था। लेकिन सारी खोजबीन और गुमशुदा बच्चे का इश्तहार चिपका देने के बावजूद उसके बच्चे का कहीं पता नहीं चला।

एक दिन उसे सूचना मिलती है कि एक बच्चे की लावारिस लाश शहर के छोर पर सुनसान पुल के नीचे बहते नाले के पास पड़ी है। वह बगल में इश्तहार दबाए भागते-भागते पहुँचा। देखा, तो लाश उसके बच्चे की ही थी। कुछ लोग भी साथ थे, कुछ और भी जुटे, पुलिस भी आ पहुँची। वह बिलख उठा। उसने बड़े से पत्थर के नीचे पड़ी बच्चे की लाश उठा, पत्थर पर अपने गुमशुदा बच्चे का इश्तहार चिपका दिया।

लोगों ने कहा—''क्या कर रहा है, अब क्या फायदा ! तेरा बच्चा अब इस दुनिया में नहीं है। पागल, वह मर चुका है !''

वह उठा और उसने भरी आँखों से कहा, ''यह ईश्वर के लिए है !''

नाम वापस ले लो !

उससे कहा गया था—''नाम वापस ले लो।''

उसने जवाब दिया—''यह काम तो ईश्वर भी नहीं कर सकता! वह जीवन वापस ले सकता है, एक बार को, नाम तो वो भी नहीं ले सकता!''

''लेकिन राजनीति ऐसा करती आ रही है। यहाँ नाम भी वापस लेना पड़ता है। नाम वापस ले ले। नहीं तो...नहीं तो... जीवन वापस हो सकता है!''

उसने कहा, ''इस तरह की राजनीति करने वालों का नाम एक दिन मिट जाएगा!''

अंततः उसे जीवन वापस करना पड़ गया।

वे बता रहे थे—''सबको, हम तो नाम वापस लेने का आग्रह कर रहे थे। नाम में क्या रखा है, ले लेना था वापस!''